चतुर्थ अध्याय

गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित नारी समस्याएँ

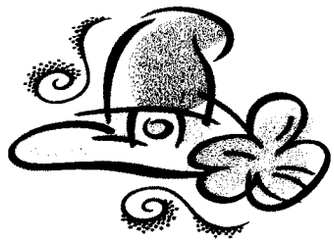

चतुर्थ अध्याय

"गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित नारी समस्याएँ"

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य के नाटक विधा में गिरिराज किशोर का नाम समाजाभिमुख नाटककार के रूप में उल्लेखनीय है। उन्होंने अपनी नाट्य कृतियों में नारी जीवन की दर्द, पीड़ा, यातना, वेदना के पहलुओं को बखुबी से यथार्थ रूप में चित्रित किया है। उनकी नाट्य रचनाओं का सृजन नारी का हिमायती है। उनके नाटक साहित्य निर्माण का उद्देश्य है नारी की व्यथा-कथा को समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर नारी शोषण के विविध आयामों को उद्घाटित करना है। भारतीय नारी समाज के नियमों में बंध कर, कई समस्याओं को झेलकर अपना जीवन किस तरह जी रही है इसका यथार्थ चित्रण गिरिराज किशोर जी के नाटकों में मिलता है। अत: गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित नारी समस्याओं का विवेचन यहाँ प्रस्तुत है।

4.1 परिवार से पीड़ित नारी की समस्या :

मनुष्य का मुख्य आधार उसका परिवार होता है और नारी किसी भी परिवार का केंद्र बिंदू होती है लेकिन परिवार में माता, बहन तथा पत्नी जैसे अटूट पारिवारिक रिश्तों को निभाकर भी नारी के साथ परिवार न्याय नहीं करता। उसे वह सम्मान नहीं मिलता जो मिलना चाहिए।

गिरिराज किशोर के 'नरमेध' नाटक में परिवार से पीड़ित नारी समस्या को चित्रित किया गया है। इस नाटक में तारा मुख्य नारी पात्र है। उसके बेटे रंजन और वंदू वंती से प्यार करते हैं। लेकिन यह बात तारा को मंजूर नहीं है। उसका मानना है कि अगर वंती उसके परिवार में आ गई तो उसका परिवार टूट जाएगा। जो लड़की दो लडकों से प्यार करती हो उसे बहु बनाना ठिक नहीं होगा। इसीलिए तारा वंदू और वंती की शादी का विरोध करती है। माँ के इस व्यवहार के कारण वंदू अमरिका चला जाता

है। वंती की शादी दूसरे लडके के साथ तय होने के कारण वंती वंदू को शादी का कार्ड भेज देती है। वंदू माँ के प्रति नाराजगी व्यक्त करते हुए अपने पिता इंद्रराव को चिठ्ठी भेज देता है। लेकिन वह चिठ्ठी तारा के हाथ लगने के कारण वह खुद को दोषी ठहराती है और दुखी होकर इंद्रराव को बताती है कि वंती को वंदू की जरूरत नहीं। उसे तो एक आदमी चाहिए। इस बात पर इंद्रराव उसे टोकता है। तारा अपने परिवार का भला चाहती है फिर भी उसके परिवारवाले उसे समझ नहीं पाते और उसे ही दोषी ठहराते हैं। अत: वह अपने परिवार से पीड़ित रहती है और बार-बार खुदखुशी करने की कोशिश करती है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "हाँ, शायद वे कह रही थी मैंने अपने बच्चों की खुशी अपने हाथों से दफना दी।"[1] इसे स्पष्ट होता है कि नारी परिवार का मुख्य अंग होकर भी परिवार उसके प्रति न्याय नहीं करता। इसीलिए नारी खुद को परिवार से अलग मानकर खुदखुशी करने पर विवश हो जाती है।

गिरिराज किशोर के 'प्रजा ही रहने दो' नाटक में वर्णित द्रौपदी पाँच पांडवों की पत्नी है। लेकिन किसी भी पति ने उसकी भावनाओं की कद्र नहीं की। वे उसे किसी वस्तु की तरह जुए के दाँव में लगा देते हैं। कौरव पांडवों के सामने द्रौपदी का वस्त्रहरण कर द्रौपदी को अपमानित करते हैं। द्रौपदी को अपने परिवार के कारण ही भरी सभा में अपमानित होना पड़ता है। अत: वह अपने परिवार की गलतियों के कारण पीड़ित हो कर महात्मा विदुर से ठिक ही कहती है - "बेटी कहकर न पुकारे। बेटी का उत्तरदायित्व बहुत बड़ा होता है। बहु ही कहना सुरक्षित होगा पराई बेटी बहु होती है और अपनी बेटी, बेटी। इस भेद को तो न आप समझ पायेंगे और न पितामह ही कभी समझें हैं। राजा धृतराष्ट्र और माँ गांधारी तक बेटीवाले होकर दूसरे की बेटी के दर्द को नहीं समझतें।"[2] द्रौपदी का प्रस्तुत मुँह तोड़ जवाब ही पारिवारिक जीवन में परिवार की

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध पृष्ठ - 36
2. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो पृष्ठ- 54

गलतियों के कारण सह रहे अन्याय तथा घुटन को स्पष्ट कर देता है। साथ ही बहु को 'बेटी' कहकर पुकारनेवाले पाखंडी बुर्जूगों का पोल खोल देता है।

गिरिराज किशोर के 'केवल मेरा नाम लो' नाटक में रजनीकान्त सुलभा का पिता होकर भी उसे कोई महत्त्व नहीं देता। वह उस पर अत्याचार करता रहता है। सुलभा रजनीकांत के व्यवहार से तंग आकर अपने स्वर्ग सिधारे माँ की तस्वीर के सामने अपना दु:ख प्रकट करती है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "माँ तुम्हे गए आज साढे तीन महीने हो गए। उस मकान को छोडते हुए सोचा था कि शायद पापा उस घर, आस-पडोस और वातावरण को छोड़ देने पर सँभलेंगे। वहाँ तो आपकी स्मृति ही स्मृति थी। पापा उसी में डूबे रहते थे। यहाँ आकर तो पापा और भी परेशान लगे... उनकी आँखो में एक अजीब तरह का डरावनापन उतर आया। पापा कितने अच्छे थे। कितना प्यार करते थे...अब उनके व्यवहार से लगता है उन्होंने कभी किसी को प्यार नहीं किया होगा।"[1] रजनीकांत उसे बार-बार तकलीफ देता है, फिर भी सुलभा उसके हवस का शिकार नहीं बनती। वह चुपचाप रजनीकान्त का अत्याचार सहती रहती है। प्रस्तुत संवाद देखिए... "मार लिजिए पापा जी भर कर मार लिजिए।"[2] अत: स्पष्ट होता है कि यहाँ सुलभा बेटी होकर भी अपने पिता के अत्याचार से पीड़ित है।

गिरिराज किशोर के 'जुर्म आयद' नाटक में परिवार से पीड़ित उम्मेदी देवी खुदखुशी करने के लिए विवश हो जाती है, फिर भी समाज तथा कानून उसे ही गुनहगार मानते हैं। उम्मेदी पर उसका परिवार दस साल से अत्याचार कर रहा था। बेटी हो जाने पर उसे लगता है कि बेटी के कारण अत्याचार खत्म हो जाएँगे। लेकिन उसके पती उसकी बेटी का बाप होने की बात को नकारता है। इसिलिए उम्मेदी खुदखुशी करने पर विवश हो जाती है।

इसी नाटक में चित्रित जस्टिस शिवचरण की बेटी आशा एक स्वाभिमानी

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो पृष्ठ- 250,251
2. वही - पृष्ठ- 284

एवं पतिव्रता नारी है। उसका पति स्वार्थ से इतना अंधा हो चुका है कि वह अपने बॉस को खुश करने के लिए आशा को पार्टी में अपने साथ चलने के लिए कहता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "फोन इतना जरूरी नहीं जितना सेक्रेटरी साहब की पार्टी में मेरे जाना। उन्होंने खास तौर से तुम्हें लाने के लिए कहा है। वे तुम्हे पसंत करते हैं।"[1] लेकिन आशा को पति का बर्ताव ठिक नहीं लगता। वह उसका विरोध करती है और अपनी इज्जत दाँव पर नहीं लगाती है। अत: स्पष्ट है कि अपने ही पति से पीड़ित होकर भी वह अपनी जान से ज्यादा अपनी इज्जत की रक्षा करनेवाली पतिव्रता भारतीय नारी स्पष्ट होती है।

अत: स्पष्ट हो जाता है कि गिरिराज किशोर के नाटकों में माता, बहु, बेटी और पत्नी जैसे परिवार की केंद्रीय घटक नारी होकर भी अपने ही परिवार के पति, बेटे, ससुर और पिता से पीड़ित है।

4.2 चंचल वृत्ति के नारी की समस्या :

चंचलता के कारण से मनुष्य का कोई भी कार्य पूरा नहीं हो सकता। मनुष्य को कोई एक निर्णय सोचकर लेना आवश्यक होता है। अगर वह चंचलता से निर्णय लेता है तो उसका विकास वहीं रूक जाता है। किशोर जी ने अपने नाटकों में ऐसे चंचल व्यक्ति को चित्रित किया है।

गिरिराज किशोर के 'नरमेध' नाटक में चंचल वृत्ति के नारी की समस्या का चित्रण किया गया है। इस नाटक में वंती चंचल नारी है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "मजे की बात तो यही है। वंती पहले मुझसे प्यार करती थी फिर भैया को करने लगी। अब अपने पति को करेगी।"[2] अत: स्पष्ट होता है कि वंती एक चंचल वृत्ति की नारी है।

गिरिराज किशोर के 'घास और घोड़ा' नाटक में पंड़ित ख्यालीराम की

---

1. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद पृष्ठ - 35
2. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध पृष्ठ- 37

पत्नी पंड़िताईन भी चंचल वृत्ति की नारी है। पंड़िताईन एक मास्टर जी की पत्नी होकर भी दहेज लेने की अभिलाषि है। पहले तो वह होनेवाले समधी हजारी लाल के सामने अपनी अमिरी दिखाने के लिए पड़ोसवालों के घर से कुर्सियाँ मँगवाती है और जब पंड़ित ख्यालीराम को पंडित हजारी लाल से दहेज के संदर्भ में बाते करने का साहस नहीं होता तब पंड़िताईन ख्यालीराम को समझाती है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "हम तो हाथ जोड़ने नहीं गए थे। वे चलकर आए हैं। अध्यच्छ थे तो काहें आऐ है... बैठे अपने घर। वे अध्यच्छ की तरह बातें करेंगे तो हम भी बेटेवालों की तरह बात करेंगे। समझ गए ना।"[1] अत: यहाँ स्पष्ट होता है कि चंचलवृत्ति की नारी के कारण सामाजिक और मानवीय मूल्यों का ऱ्हास होता है। ऐसी नारीयाँ अपने परिवार के साथ-साथ पूरे समाज को ले डूबती हैं। किशोर जी अपने नाटकों में ऐसी नारियों की वृत्ति पर प्रकाश डाला है।

4.3 असाहय नारी की समस्या :

नारी शौर्य से अवगत होकर भी वर्तमान समय में नारी को असाहय समझकर उसकी अवहेलना की जाती है। सृष्टि में जितने भी महापुरुष पैदा हुए तथा उन पर जो संस्कार हुए हैं उन संस्कारों से जिस आदर्श समाज की निर्मिति हुई है उसका मूल स्त्रोत नारी ही है।

'प्रजा ही रहने दो' नाटक में गिरिराज किशोर ने महाभारत की असाहय द्रौपदी का चित्रण किया है। प्राचीन काल से लेकर आज तक नारी पर अत्याचार किया जा रहा है। प्राचीन काल में नारी को केवल उपभोग की वस्तु माना गया था। इसीलिए उसे समाज में अलग स्थान नहीं दिया गया था। सभी निर्णय पुरुष प्रधान संस्कृति ने अपने हाथ में लिए थे। प्रस्तुत नाटक में द्रौपदी को पांच पांडवों के साथ शादी करनी पडती है फिर भी वह विरोध नहीं करता। पांडव द्रौपदी को जुए के दाँव पर लगा देते हैं। द्रौपदी के भावनाओं को कोई स्थान नहीं दिया जाता। किसी वस्तु की तरह उसे

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा पृष्ठ- 152, 153

इस्तेमाल किया जाता है। पत्नी होकर भी उसका कोई विचार नहीं किया। इसीलिए द्रौपदी अपनी भावनाओं को स्पष्ट करती है। प्रस्तुत कथन देखिए "एक ही पति होता तो स्थितियाँ इतनी न उलझती। पांच-पांच पतियों द्वारा रक्षित पत्नी को अंतत: अपनी रक्षा स्वंय ही करनी पड़ती है अपनी नियति को तो मैं उसी समय ताड़ गयी थी जब वरमाला एक को पहनायी गयी थी, और रोटी के टूकडे की भांति मुझे पांचों मे बाँट दिया था। मैं आज तक नहीं समझ पाई..... मैं क्या हूँ, रोटी का टुकडा या राजनिती का उलझा हुआ सूत्र।"[1] अत: स्पष्ट होता है कि नारी प्राचीन काल से लेकर आज भी असाहय और पीडित है। इस समस्या का गिरिराज किशोर ने बखुबी से चित्रण किया है।

'घास और घोडा' नाटक में नाटककार गिरिराज किशोर ने अपने नाटक के माध्यम से असाहय नारी की समस्या को स्पष्ट किया है। विमला प्रधान के बेटे के साथ नाजायज संबंध रखती है। इसी कारण प्रधान का बेटा उसके पति रामनिरख का कत्ल करता है। लेकिन प्रधान के बेटे को बचाने के लिए विमला अपने ही भाई के खिलाफ पुलिस में झूठा रिपोर्ट दर्ज करती है। प्रधान दरोगा को रिश्वत देता है। इसलिए दरोगा विमला को उसके भाई के खिलाफ रामनिरख के कत्ल का केस दर्ज करने के लिए धमकाता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है "देखो बीबी, अपना आगा-पीछा सोच लो। उसे जाना था सो चला गया तुम्हारी पूरी जिंन्दगी पड़ी है। प्रधान का बेटा भला हो या बुरा, अब जिन्दगी उसीके सहारे कटनी है। रपट में लिखा ही बोलना नहीं तो इसे फाँसी लगेगी और तुम गलत बयानी में जेल कट़ोगी। कभी भाई के लिए चुनचुनी मचे। इस सारे झंझट के पीछे तुम ही हो। उस लड़के को ड़ोर पर ड़ाला होता तो खुन खराबा न हुआ होता। प्रधान ने कहा-सुना तो बचा लिया, नहीं तो पिस्तौल तुम्हारे ही कब्जे से बरामद कराता। मजा उठ़ाया है तो भोगो भी।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि कानून का रक्षक अपने अधिकारों के बलबूते पर असाहय नारी पर अत्याचार करता है। यहाँ विमला

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो पृष्ठ- 55
2. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा पृष्ठ- 180

अपनी विवशता के कारण विद्रोह नहीं कर पाती है और उसे वही करना पड़ता है जो दरोगा तथा प्रधान चाहते हैं।

'केवल मेरा नाम लो' नाटक में किशोर जी ने असाह्य नारी की समस्या को चित्रित किया है। मनुष्य जब कुंठित वासना से पीड़ित हो जाता है तब वह रिश्ते-नाते भूलाकर नारी पर अत्याचार करता है। इस नाटक में असाह्य्य सुलभा अपने पिता राजनीकान्त की कुंठित वासना के अत्याचार से पीड़ित है। रजनीकान्त सुलभा के साथ अपनी पत्नी की तरह व्यवहार करना चाहता है। जब सुलभा रजनीकान्त को पापा कहती है तो वह उसे जोर-जोर से पीट़ता है। सुलभा अपने पिता का अत्याचार चुपचाप सहती रहती है लेकिन पिता की हवस का शिकार नहीं बनती। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "मार लीजीए...जी भरकर मार लीजीए पापा मैं आपकी बेटी हूँ...बेटी ही रहूँगी।"[1] नाटककार गिरिराज किशोर ने इस नाटक के माध्यम से असाह्य नारी पर अत्याचार करनेवाले समाज पर तीखा व्यंग्य किया है। साथ ही इस बात को स्पष्ट किया है कि खुन का रिश्ता होकर भी नारी असुरक्षित और असाहय्य है।

'जुर्म आयद' नाटक के माध्यम से नाटककार गिरिराज किशोर ने अपने परिवार के अत्याचारों का विरोध न करनेवाली उम्मेदी की समस्या को स्पष्ट किया है। इस नाटक में असाह्य्य उम्मेदी जब अपने बेटी को साथ लेकर खुदखुशी करती है तब वह तो बच जाती है लेकिन दुर्भाग्य से उसकी बेटी मर जाती है। बेटी का कत्ल करने के जुर्म में दफा **302** और दफा **307** के तहत उम्मेदी को जेल में बंद कर दिया जाता है। उसे बचाने के लिए अदालत में वकील बचाव का काम करता है। सरकारी वकील उम्मेदी को जब दोषी ठहराता है तब वकील बचाव असाहय उम्मेदी की हालत स्पष्ट करता है। प्रस्तुत कथन देखिए "जब तक गलाजत अपने तक महसूस थी, उम्मेदी चुपचाप सह रही थी। मासूम बेटी तक पहुँची तो वह अपना संतुलन खो बैठी। कौन

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो पृष्ठ- **284**

जाने आगे चलकर इस बेगुनाह बच्ची के साथ क्या सलुख हो। इसके पास दो रास्ते थे या तो शेरनी बनकर उनका खुन पी जाती। उस हालात में भी उसके लिए दफा 307 थी। या फिर वही करती जो उसने किया।"[1] अत: स्पष्ट होता है कि नारी को आज भी समाज असाहय मान कर उस पर अधिकार जताने का काम कर रहा है। इसीलिए तथा आज भी नारी असाहय रूप से पीड़ित हो रही है।

4.4 स्वाभिमानी नारी की समस्या :

नारी के पास स्वाभिमान का होना बड़े गौरव की बात मानी जाती है। एक स्वाभिमानी नारी स्वयं किसी के अधिन रहना नहीं चाहती। अपने स्वाभिमान को बनाए रखने के लिए किसी भी समस्या के सामने कितना भी संघर्ष करना पड़े वह पीछे नहीं हट सकती। जान से सभी ज्यादा वह स्वाभिमान को महत्त्व देती है। लेकिन प्राचीन काल से लेकर आज तक नारी को हमेशा पुरुष के अत्याचार से पीड़ित होना पड़ा है। समाज या परिवार ने नारी का मानसिक तथा शारीरिक शोषण हमेशा ही किया है।

'जुर्म आयद' नाटक में गिरीराज किशोर ने स्वाभिमानी आशा को चित्रित किया है। आशा का पति स्वार्थ से इतना अंधा हो जाता है कि वह अपने बॉस को खुश करने के लिए आशा को पार्टी में साथ चलने के लिए कहता है। इस पर आशा उसका विरोध करती है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है 'मैं उन पर थूँकती हूँ।"[2] इस कारण उसका पति उसे पीटता है।आशा खुदखुशी करती है लेकिन अपनी इज्जत दाँव पे नहीं लगाती।

अत: स्पष्ट है यहाँ अपने स्वाभिमान के कारण जान देनेवाली नारी चित्रित है।

किशोर जी का 'केवल मेरा नाम लो' यह नाटक समाज के एक स्वाभिमानी एवं संस्कारक्षम नारी की समस्या का दर्शन कराता है। प्रस्तुत नाटक में मिसेज चामड़िया सुलभा को रिश्वत देने का प्रयास करती है लेकिन सुलभा रिश्वत नहीं लेती है। प्रस्तुत

---

1. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद पृष्ठ – 21
2. वही - पृष्ठ- 36

संवाद देखिए "मैं हाथ जोड़ती हूँ। ईश्वर के लिए मुझे क्षमा करे... मम्मी अब नहीं रही, वैसे भी मम्मी को ऐसे चीजों का शौक नहीं था। अगर वे होती तो कभी स्वीकार न करती। माँ को किसी से भी मिलने में संकोच होता था... अच्छा हो आप बाहर जाकर पापा से बात कर लों।"[1] स्पष्ट है कि सुलभा स्वाभिमानी नारी होने के कारण वह किसी मोह माया में नहीं पड़ती।

4.5 अभावग्रस्त नारी की समस्या :

मनुष्य को अपना जीवन यापन करने के लिए अर्थ की आवश्यकता होती है। गरीब लोग अर्थ की समस्या से छुटकारा नहीं पा सकते। आभावग्रस्त की समस्या से हमेशा पीड़ित रहते हैं। लेकिन नारी अपनी अभावग्रस्त परिस्थिति का सामना करती रहती है। वह संकट का सामना करके अपना जीवन बिताती रहती है। डॉ.एस.पी श्रीवास्तव इसी संदर्भ में लिखते हैं - "यदी गरीबी का सजीव चित्रण देखना है तो भारत के असंख्य गांवों (जहाँ देश की करीब 70 प्रतिशत से अधिक जनता रहती है।) में जाकर देखना होगा की गरीबी की मार कितनी भयानक होती है। घास-फुस या मिट्टी के बने टूटे फूटे मकानों में रहनेवाले बेजमीन तथा बजायदार करोडों ऐसे नंगे, भूखे, बेरोजगार, साधनहीन, अशिक्षीत, अस्वस्थ, दुर्बल तथा असहय लोग दिखाई देंगें जिनके चेहरे पर गरीबी की छाप खुले रूप से दिखाई देती है।"[2] अत: स्पष्ट है भारत में ज्यादातर लोग अभावग्रस्ता की समस्या से पीड़ित है।

किशोर जी के 'घास और घोडा' नाटक में पण्डिताईन ख्यालिराम की पत्नी है। वह अभावग्रस्तता से तंग आ चुकी है। उसका पारिवारिक जीवन अभावग्रस्त स्थिति में बिता है। पण्डित ख्यालिराम जब उसे बताता है कि पंण्डित हजारीलाल अपनी बेटी के शादी का रिश्ता लेकर आनेवाला है तब पण्डिताईन उसे टोकती है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "पहले कहते ना किनचकर बात बताते हो। सिकार के बकत कुतिया हगाई। इतने

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो पृष्ठ- 259
2. डॉ.एस.पी.श्रीवास्तव - भारतीय सामाजिक समस्याएँ पृष्ठ- 337

भारी मानस कुटिया पर पधारे और यहाँ भंग के सिवाय कुछ हो ही नहीं। खड़े क्या हो, अपने उन कुँवरजी को बुलाओं, पड़ोस के यहाँ से कुर्सी-मेज मँगवा लो। मैं बडी मिसराइन के घर गिरो गाँठ का इन्तजाम करके आती हूँ..."[1] इससे पण्डिताईन की अभावग्रस्त परिस्थिति स्पष्ट हो जाती है।इस समस्या का गिरिराज किशोर ने बडी बखुबी से चित्रण किया है।

4.6 पुलिस से पीड़ित नारी की समस्या :

कानून का रक्षक ही जब भक्षक बन जाता है, तब आम इन्सान का जीना मुश्किल हो जाता है। डॉ.कामीनी बाली जी के अनुसार, i) "पुलिस का खैया पक्षपात पूर्ण रहता है, कानून और व्यवस्था में अपनी मर्जी करती है और तभी क्रियाशील होती है जब प्रभावशाली व्यक्ति या लोगों का मामला रहें। ii) पुलिस गरीब या प्रभावहीन नागरिक की शिकायत की सुनवाई नहीं करती। अत: आम नागरिक को मुसीबत के समय पुलिस से कोई उम्मीद संभव नहीं लगती है। iii) पुलिस में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण वास्तविक मामलों में भी सहाय्यता लेना कठीण है। समृदध व्यक्ति को इसकी सहज उपलब्धता ने पुलिस पर से लोगों का विश्वास हटा दिया गया है।"[2]

इसी संदर्भ में डॉ.वाय.बी.धुमाळ इसी संदर्भ में लिखते हैं, "पुलिस एक तरफ सामाजिक अपराध वृत्ति से जनतंत्र में पुलिस शासक और शासित भी होती है। अत: यदि वह अकार्यक्षम बन पाती तो अपराधियों की संख्या बढ जाती है।"[3] अत: स्पष्ट है कि कानून का रक्षक अगर भक्षक बन जाता है तो सामान्य जनता इस समस्या से पीड़ित हो जाती है।

'जुर्म आयद' नाटक में पुलिस से पीड़ित उम्मेदी की समस्या को चित्रित किया गया है। उम्मेदी अपने परिवार से पीड़ित होने के कारण खुदखुशी करती है लेकिन

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा पृष्ठ- 147
2. डॉ.कामिनी बाली - पर्यावरण और सामाजिक चेतना पृष्ठ- 112
3. डॉ.वाय.बी.धुमाळ - साठोत्तरी हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यांसो का प्रवृत्तिमूलक तुलनात्मक अध्ययन पृष्ठ- 64

उसमें वह बच जाती है और उसकी बेटी की मृत्यु हो जाती है। इसी करण उम्मेदी पर खुदखुशी करने तथा बेटी का कत्ल करने के जुर्म साजिश में दफा **302** और **307** के तहत केस दर्ज किया जाता है। वहाँ का दरोगा पुलिस होकर भी उम्मेदी को धमकाता है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "आदमी का नाम बता? अरे चुप क्यों बैठी हो आदमी का नहीं तो यार का बता दें। फूट कुछ तो मुँह से फूट... फूटती की नहीं? "[1] दरोगा के इस तरह के गंधे बर्ताव के कारण उम्मेदी पीड़ित हो जाती है इसलिए वह दरोगा का विरोध करती है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है "दरोगा जी, इतना बडा हाक्कम हाके लुच्चों लफंगो वाली बानी बोल्ले हैं।"[2] चीफ उम्मेदी कों जवाब देने के लिए कहता है, उम्मेदी चुप रहती है इसीलिए वह उम्मेदी को कहता है, बोल! बोल! कोई बोलता रहता है तो दरोगा जी भी बोलते रहते है। नहीं तो डंड़ा डलवाकर चुप्पे का हलक खुलवाते है।"[3] अत: स्पष्ट होता है कि कानून के रक्षक असाह्य नारी पर अत्याचार करते हैं। यह समस्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

4.7 आश्रीत नारी की समस्या :

प्राचीन काल से नारी को पुरुषों के अधिन रहना पड़ा है। डॉ.रामसुंदर लाल लिखते हैं - "वैदिक काल में नारी को केवल पति की जीवन संगीनी ही नहीं माना था। अपितु वह गृह स्वामिनी और पति के साथ धार्मिक तथा अर्थिक कार्यो में समान रूप से भागीदार थी।"[4] लेकिन रीति काल से उसका महत्त्व कम हो गया। इसी संदर्भ डॉ.रामेश्वर नारायण 'रमेश' ने लिखा है - "प्रारंभ में नर और नारी समानाधिकारी थे। कार्य का विभाजन या किंतू सभ्यता के विकास के साथ-साथ पुरुषों में स्वार्थ परता की भावना का उदय हुआ। अपने उन्मुक्त जीवन में उसने नारी को बाधक पाया। अत: नारी सामाजिक बंधन में जकड़ दी गई। समाज ने नियम बनाए और नारियों की स्वतंत्रता

---

1. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद - पृष्ठ – 7
2. वही - पृष्ठ - 7
3. वही - पृष्ठ - 6
4. डॉ रामसुंदर लाल - प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों में नारी मनो विज्ञान पृष्ठ- 21

छीन ली। उन्हें घर की चहार दीवारी में कैद कर लिया गया। उनका कार्यक्षेत्र सीमित हो गया और पुरुषों का कार्यक्षेत्र विस्तृत फलक पर फैल गया। नारीयाँ पुरुषों के अधिन हो गयी। उसे पुरुषों के अनुकुल आचरण करने के लिए विवश किया गया। कालान्तर में नारीयाँ स्वतंत्र भी हूई रामायण युग इसी का प्रतिक है। किन्तु पुन: वे सामाजिक नियमों में बाँध दी गयी।"[1] अत: स्पष्ट है कि पुरुष प्रधान सत्ता ने नारी को आश्रीत बनाकर उसे मूल्यहीन तथा भोग वस्तु माना। उससे स्वयं का निर्णय स्वयं लेने का अधिकार छिन लिया।

किशोर जी के "प्रजा ही रहने दो' नाटक में किशोर जी ने आश्रीत द्रौपदी की समस्या को स्पष्ट किया है। द्रौपदी नारी होने के कारण उसे परिवार में कोई विशेष स्थान नहीं है। परिवारवाले उसे किसी मूल्यहीन वस्तु के समान मानते हैं और उसे किसी वस्तु ही की तरह दाँव पर लगाते हैं। उसे द्रौपदी कुंती सामने समस्या रखती है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है – "एक ही पति होता तो स्थितियाँ इतनी न उझलती। पांच-पांच पतियों द्वारा रक्षीत पत्नी को अपनी रक्षा स्वंय ही करनी पड़ती है।"[2] अत: स्पष्ट होता है कि नारी को प्राचीन काल से लेकर पुरुषों के आश्रीत रहना पड़ा है। उसी कारण उसे मूल्यहीन माना गया। तथा उसे इस समस्या को सहना पडा है।

'केवल मेरा नाम लो' नाटक में सुलभा रजनीकान्त की बेटी होकर भी रजनीकान्त सुलभा पर एक आश्रीत नारी जैसा व्यवहार करता है। जब सुलभा उसके वासना का शिकार नहीं हो पाती तब रजनीकान्त उसे कोड़ों से पीटता है। फिर भी सुलभा रजनीकान्त का विरोध नहीं कर पाती। वह पिता से त्रस्त हो जाती है।प्रस्तुत कथन देखिए "और नहीं सहा जाता, पापा खूब कोडें बरसाओ। यह शरीर... नष्ट होने योग्य है... इसने पिता को भरमा दिया। उफ...आह...आह...।"[3] अत: स्पष्ट होता है

1.	डॉ.रामेश्वर नारायण 'रमेश'	-	साहित्य में नारी विविध संदर्भ	-	पृष्ठ- 14
2.	गिरिराज किशोर	-	प्रजा ही रहने दो	-	पृष्ठ- 55
3.	गिरिराज किशोर	-	'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो	-	पृष्ठ- 284

कि नारी पर पुरुष प्रधान व्यवस्था में प्राचिन काल से लेकर आज तक सिर्फ जुल्म होते आ रहे हैं।

4.8 बदनामी से पीड़ित नारी की समस्या :

समाज में नारी की इज्जत एक काँच के बर्तन की तरह मानी जाती है, छोटा सा धक्का भी उसकी इज्जत के टुकडे कर देता है। जैसे नारी को किसी ने बदचलन कहा तो उसको बदनाम करने के लिए इतना ही काफी हो जाता है।

'नरमेध' नाटक में गिरिराज किशोर ने बदनामी से पीड़ित नारी की समस्या को स्पष्ट किया है। वंती को तारा दवारा बदनाम होना पड़ता है। वंती रंजन को सिर्फ मित्र मानती है और उसके बड़े भाई वन्दु से प्यार करती है। लेकिन रंजन वंती से प्यार करता है और तारा वंती को ही गलत मानकर बदचलन कहती है। वंती तारा के इस आरोप से पीड़ित हो जाती है। वंती वंदू के पिता इन्द्रराव से तारा के बारे में अपना मत प्रकट करती है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है "चाची ने कहा था, मुझे बहू चाहिए द्रौपदी नहीं, चाची की बात पर मुझे आश्चर्य हुआ था। मन से तो द्रौपदियाँ सभी होती है। चाची तो यह जानती थी।"[1]

किशोर जी के 'प्रजा ही रहने दो' नाटक में द्रौपदी पाँच पांडवों की पत्नी थी। इसीलिए उसे कौरव तथा गांधारी की ओर से बदनाम होना पडता है। कुंती युद्ध रोकने के लिए गांधारी के पास जाकर द्रौपदी की हालत स्पष्ट करती है। वह कहती है कि इस युद्ध के कारण द्रौपदी का चेहरा काला पड़ गया है। इस भीषण युद्ध से वह भयभीत हो गयी है। इसलिए युद्ध को तुम रोक दो। इस पर जवाब में गांधारी द्रौपदी को बदनाम करती हुई कुंती को टोकती है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "तुम्हारी बहू मेरी बहुओं का सुहाग छीनना चाहती है। मेरा एक बेटा मरेगा तो मेरी एक बहू विधवा होगी। तुम्हारी बहू तो पांचो में से एक मरने पर भी विधवा नहीं कहलायेगी।"[2] इससे

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरेधम पृष्ठ- 40
2. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो पृष्ठ- 91

स्पष्ट होता है कि द्रौपदी के पांच पति होने के कारण गांधारी उसे बदनाम करता है।

'जुर्म आयद' नाटक में उम्मेदी बदनामी का शिकार होती है। इसीलिए उम्मेदी अपने बेटी के साथ खुदखुशी करती है। उम्मेदी बच जाती है लेकिन उसके बेटी की मृत्यु हो जाती है। इसीलिए उम्मेदी को खुदखुशी करने पर तथा बेटी के कत्ल की जुर्म में दफा 302 तथा 307 के अनुसार जेल में बंद कर दिया जाता है। जेल में भी दरोगा उसे बदनाम करता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है "आदमी का नहीं तो यार का ही सही फूट कुछ तो मुंह से फुट... फुटती है कि नहीं..."[1] इससे स्पष्ट होता है कि नारी को मजबुरन बदनामी सहनी पड़ती है। लेकिन उसकी बदनामी के लिए जिम्मेदार होनेवाले एक किनारे हो जाते हैं और नारी को ही कठघरें में खड़ा रहना पड़ता है।

4.9 पिता से पीड़ित नारी की समस्या :

नारी को समाज ने प्राचीन काल से लेकर आज तक उपभोग की वस्तु माना है। उसे खुद का निर्णय खुद को लेने का अधिकार नहीं दिया। उसका परिवार में भी अपने पिता, भाई सभी के नीचे उसका का स्थान रखा गया है। नारी को सभी से पीड़ित होना पड़ता है।

'केवल मेरा नाम लो' नाटक में नाटककार गिरिराज किशोर ने पिता से पीड़ित सुलभा की समस्या को चित्रित किया है तथा पिता के भ्रष्ट व्यवहार पर तीखा व्यंग्य किया है। रजनीकान्त पत्नी रागिनी की मृत्यु के बाद मानसिक स्थिति बिगड़ जाती है। उसकी बेटी सुलभा रागिनी की तरह दिखाई देने के कारण वह सुलभा को ही रागिणी समझकर पत्नी जैसा व्यवहार करने का प्रयास करता है। इसलिए सुलभा उसका विरोध करती है। जब रजनीकान्त सुलभा पर अत्याचार करता है तब सुलभा अपने माँ के तस्वीर के सामने अपनी पीड़ा स्पष्ट करती है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है "यहाँ आकर तो पापा और भी परेशान रहने लगे...उनकी आंखो में एक अजीब तरह का डरावनापन उतर आया। पापा कितने अच्छे थे। कितना प्यार करते थे... अब उनके व्यवहार से लगता है

1. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद पृष्ठ – 7

उन्होंने कभी किसी से प्यार ही नहीं किया। बहुत नाराज... घृणा का भाव हर समय उनके चेहरे पर बना रहता है। बताओं मैंने ऐसा क्या किया... क्या किया।"[1] अतः स्पष्ट है कि सुलभा को अपने ही पिता से पीड़ित होना पड़ता है।

4.10 पतिपरायण नारी की समस्या :

प्राचीन काल से लेकर आज तक नारी अपने पति को परमेश्वर मानकर चली आयी है। वह पति के सभी अपराधों को माफ करती हुई आयी है। लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि उसने परमेश्वर माना हुआ पति ही उसके साथ गंधा व्यवहार करता आया है। उसने अपनी पत्नी को मर्यादा की दीवारों में बंद कर दिया है अक्सर अत्याचार करता रहा है।

इसी संदर्भ में डॉ.घनशाम भुतड़ा लिखते हैं - "नारी अब केवल रमणी या भार्या नही रही वरना घर के बाहर समाज का एक विशेष अंग तथा महत्त्वपूर्ण नागरिक बनकर प्रस्तुत हुई है।"[2] अत: स्पष्ट है कि नारी समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग होकर भी उसे मूल्यहीन वस्तु माना गया है।लेकिन अब नारी समस्या का सामना करने लगी है।

'प्रजा ही रहने दो' नाटक में पतिपरायण द्रौपदी को स्पष्ट किया है। पांच-पांडवों की पत्नी होने के कारण द्रौपदी उनको परमेश्वर मानती है। लेकिन इन्ही पांच पतियों ने द्रौपदी को जुए में दाव पर किसी मूल्यहीन वस्तु की तरह लगा दिया। कौरव द्रौपदी को दाँव में जितने के कारण वस्त्र निकालकर अपमानित करते हैं। जब द्रौपदी को नकुल-सहदेव वे उसे उसका ध्यान रखने के लिए कहती है तब द्रौपदी कुंती को टोकती है। प्रस्तुत कथन देखिए - "आवश्य रखुंगी माँ, जब पति अपने पत्नी का भार संभलने में असमर्थ होते हैं तो पत्नी को ही पति का भार भी वहन करना पडता है। माँ आप तो इस स्थिति को मुझसे भी अधिक जानती है।"[3]

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ 250,251
2. डॉ.घनश्याम भुतडा - समकालीन हिंदी कहानियों में नारी के विविध रूप - पृष्ठ- 110
3. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ- 54

'जुर्म आयद' नाटक की पतिपरायन नारी उम्मेदी अपने पति द्वारा किए गए अत्याचार से पीड़ित हो जाती है। वह दस साल तक उसे परमेश्वर मानकर उसके अत्याचार सहती रहती है। जब उसे बेटी होती है तो उसे लगता है कि कम-से-कम अभी तो अत्याचार कम होंगे। लेकिन उसके पति बेटी का बाप होने से मुखर जाता हूँ। इससे उम्मेदी सोचती है कि जिसे उसने परमेश्वर माना वही उसको बदनाम कर रहा हैं। इसलिए वह अपनी बेटी के साथ खुदखुशी करती है। जस्टीश शिवचरण की बेटी आशा पतिपरायण नारी है। लेकिन उसका पति स्वार्थ से इतना अंधा बन चुका है कि वह आशा को पार्टी में चलने का आग्रह इसलिए करता है उसके चलन से उसका बॉस खूश हो जाता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है- "बीवी की जगह पति के चरणों में होती है जिधर उसके चरण चल पड़े उधर ही पत्नी का शीश झुकना चाहिए।"[1] आशा के विरोध करने से वह आशा को पीटता है। आशा खुदखुशी करती है मगर अपनी इज्जत नहीं बेचती।

अत: स्पष्ट है कि नाटककार गिरिराज किशोर ने पतिपरायन नारी पर अत्याचार करनेवाले पुरुष पर तीखा व्यंग्य किया है और आज भी पतिपरायन नारी पति से ही पीड़ित हो रही है इस तथ्य को स्पष्ट किया है।

4.11 राजनीति से पीड़ित नारी की समस्या :

पुरुष प्रधान सत्ता ने नारी का उपयोग गंधे राजनीति में भी किया है। अपने स्वार्थ के कारण नारी का उपयोग किसी वस्तु की तरह किया है।

'प्रजा ही रहने दो' नाटक में गिरिराज किशोर ने राजनीति से पीड़ित द्रोपदी की समस्या को स्पष्ट किया है।पांडव अपने कुटिल राजनीति के लिए जुआ खेलते हैं उसमें वे द्रोपदी को दांव पर लगा देते हैं। गंदी राजनीति के खेल के कारण द्रौपदी को कौरवों से अपमानित होना पड़ता है। सारे दरबार के सामने द्रौपदी के वस्त्र निकाल दिए

---

1. गिरिराज किशोर - 'जुर्म आयद' पृष्ठ- **35, 36**

जाते हैं। शकुनि द्रौपदी को अपमानित करता है। प्रस्तुत कथन देखिए "कहो तो वस्त्र और आभूषण उतरवा दूँ। इनसे एक और एंव खेल लेना उतारों, दु:शासन उतारो।"[1] अत: स्पष्ट है कि नारी को राजनीति में किसी वस्तु की तरह दाँव पर लगाया जाता है। जिससे बिना किसी दोष के भी नारी को पीड़ित होना पड़ता है।

4.12 वृद्ध नारी की समस्या :

नारी को बचपन से लेकर बुढ़पे तक समस्याओं को झेलना पड़ता है। पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में नारी जीवन, उसकी पीड़ा, यातना आदि का गिरिराज किशोर ने चित्रण किया है। बुढ़ापे में बेटों की मृत्यु के कारण उनकी माता कितनी दु:खी होती है इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

"प्रजा ही रहने दों' नाटक में गिरिराज किशोर ने वृद्ध गांधारी की समस्या को चित्रित किया है। महाभारत के भीषण युद्ध में गांधारी के सौ पुत्र कौरव मारे जाते हैं। पांडवों की विजय होने से गांधारी को अपनी सत्ता छोड़नी पड़ती है। उसका वृद्धत्व का आधार उसके बेटे थे। लेकिन उनकी मौत को कारण बूढ़ी गांधारी को अंधे धृतराष्ट्र के साथ जीवन यापन करने के लिए हस्तीनापुर छोड जंगल में जाना पड़ता है। प्रस्तुत कथन देखिए - "कहीं मेरे पुत्र विजयी हुए होते तो तहस-तहस मानवता का शाप उन्हीं के सिर पड़ा होता।"[2]

4.13 नारी शिक्षा की समस्या :

प्राचिन काल में नारी का पढ़ना ठिक नहीं माना जाता था। शिक्षा के प्रति नारी को समाज सुधारकों तथा विचारवंतों ने प्रेरित किया। महात्मा फुले तथा सावित्रीबाई फुले का नारी शिक्षा के प्रति महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। शहर में नारी, पुरुषों के साथ नौकरी कर रही है लेकिन ग्रामीण भागों में नारी शिक्षा का विकास कम मात्रा में हुआ है। शिक्षा समाज निर्माण का प्रधान अंग है। शिक्षा के कारण चेतना, जागृति तथा विकास के

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 40
2. वही - पृष्ठ- 104

विभिन्न अंगों का निर्माण होता है। नारी को अपने जीवन यापन के लिए शिक्षा आवश्यक है। नारी जीवन की दुर्बलता के दो प्रधान कारण है एक शिक्षा का अभाव और दूसरा पूरुष प्रधान सत्ता।

'जुर्म आयद' नाटक में उम्मेदी एक ग्रामीण नारी है, उस पर परिवारवालों नें अत्याचार किया है जिसके कारण उम्मेदी खुदखुशी करने पर मजबुर हो जाती है। उम्मेदी अनपढ़ होने के कारण उसका फायदा दरोगा उठाता है। वह उसे अपमानित करता है। प्रस्तुत कथन देखिए "बोलती है या नही? मंगवाऊँ डंडा और बनाऊँ करम कल्ला।"[1] अत: स्पष्ट है कि नाटककार गिरिराज किशोर ने नारी शिक्षा की समस्या को अपने नाटक के माध्यम से स्पष्ट किया है।

4.14 भयभीत नारी की समस्या :

भय यह इन्सान की मानसिकता है। आनेवाले संकट से घबराकर मनुष्य भयभीत हो जाता है। प्राचीन काल से लेकर नारी को हर समस्या का सामना करना पड़ा है और हर बार वह भयभीत होती रही है।

'प्रजा ही रहने दो' नाटक में गिरीराज किशोर ने कुंती के भय की समस्या का चित्रण किया है। गिरिराज किशोर ने कुंती के आंतरिक भय, आशंका, अनिश्चय को चित्रित किया है। महाभारत का भीषण युद्ध शुरू होता है। कौरवों की सेना अधिक होने तथा बेटों के युद्ध में जाने से कुंती भयभीत हो जाती है। विदुर उसे युद्ध का समाचार सुनाता है। कुंती विदुर के सामने अपनी हालत स्पष्ट करती है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है "कभी-कभी मुझे भय लगने लगता है... रात को सो नहीं पाती। चित्र-विचित्र आवाजें सुनाए पड़ते हैं। मैनें देखा, बिल्ली के बच्चों को भयानक काला बिलौटा ले गया। बिल्ली बहुत लड़ी मगर कुछ नहीं कर पायी। ऐसा क्यों होता है विदुर जी।"[2] अत: स्पष्ट है कि अपने बेटे युद्ध में जाने के कारण कुंती भयभीत हो जाती है।

---

1. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद - पृष्ठ – 6
2. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ- 80

4.15 मानसिक पीड़ा से त्रस्त नारी की समस्या :

मनुष्य का स्वास्थ्य उसकी मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है। अगर वह मानसिक पीड़ा से त्रस्त होता है तो उसके जीवन में समस्याओं का जाल फैलता रहता है। जिससे बाहर आना उसके लिए असंभव हो जाता है।

'नरमेध' नाटक में गिरिराज किशोर ने मानसिक पीड़ा से त्रस्त तारा को स्पष्ट किया है। तारा अपने परिवार की चिंता करनेवाली नारी है। उसके बेटे वंन्दु और रंजन दोनों वंती से प्यार करते हैं। इस बात का पता तारा को लगने से तारा वंन्दु और वंती की शादी का विरोध करती है। वंन्दु माँ के इस व्यवहार से अमरिका चला जाता है।उसे लगता है अमरिका चले जाने से उसकी माँ निर्णय बदल देगी। लेकिन तारा अपने निर्णय पर अटल रहती है। वंती की शादी दूसरे लड़के के साथ तय हो जाने के कारण वंती वंन्दू को अपनी शादी का कार्ड अमरिका भेज देती है। वंन्दु अपनी माँ के प्रति नाराजगी व्यक्त करते हुए अपने पिता को चिठ्ठी भेज देता है। लेकिन वह चिठ्ठी तारा के हाथ लगती है। चिठ्ठी पढ़कर तारा की मानसिक स्थिति बिगड जाती है। वह मानसिक पीड़ा से त्रस्त होकर बार-बार खुदखुशी करने का प्रयास करती है। वह अपनी मानसिक स्थिति अपनी सहेली नीरा के सामने व्यक्त करती है। प्रस्तुत संवाद देखिए – "हाँ दु:ख देने का पार्ट तो निभा ही रही हूँ। यही आग क्या कुछ कम है। लेटती हूँ तो शरीर पर फफौले उभर आते हैं। रात-रात भर चलती हूँ। वे कहते है, तारा, तुम्हारे चक्कर में हम ही नहीं रहेगें। पहले कभी उन्होंने ऐसा नहीं कहाँ।"[1] अत: स्पष्ट हो जाता है कि परिवारिक संघर्ष के कारण तारा की मानसिक स्थिति बिगड़ जाती है।

'प्रजा ही रहने दो' में नाटककार गिरिराज किशोर ने मानसिक पीड़ा से त्रस्त द्रौपदी की समस्या को चित्रित किया है। द्रौपदी पांच पांडवो की पत्नी है। पांडव

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध पृष्ठ- 50

कौरवों के साथ जुआ खेलते हैं और जुए में किसी वस्तु की तरह वे द्रौपदी को दांव पर लगाकर हार जाते हैं। जिस कारण द्रौपदी की मानसिक स्थिति बिगड़ जाती है। वह कुंती से कहती है - "एक ही पती होता तो स्थितियाँ इतनी न उझलती। पांच-पांच पतियों द्वारा रक्षीत पत्नी को अपनी रक्षा स्वंय ही करनी पड़ती है।"[1] अत: स्पष्ट होता है कि नारी की रक्षा करनेवाला उसका पति ही अगर रक्षा करने में असमर्थ हो जाता है तो उस नारी की मानसिक स्थिति बिगड़ जाती है।

"केवल मेरा नाम लो' नाटक में गिरिराज किशोर ने मानसिक पीड़ा से त्रस्त सुलभा को स्पष्ट किया है। सुलभा अपने पिता रजनीकान्त के अत्याचार से पीड़ित हो जाती है। रजनीकान्त के कारण वह ठिक तरह से जी नहीं पाती। किसी से ठिक तरह से बात नहीं कर सकती है। गिरिराज किशोर ने नाटक के माध्यम से सुलभा भी मानसिक स्थिति को स्पष्ट किया है। वह अपने पिता के बर्ताव के कारण मानसिक पीड़ा से त्रस्त है। प्रस्तुत कथन देखिए "मैं क्या करूँ पापा मेरा कसूर तो बताइए। कैसे आपको प्रसन्न रखूँ?"[2] अत: स्पष्ट होता है कि पिता के अत्याचार के कारण मानसिक पीड़ित हो जानेवाली सुलभा की इस समस्या को गिरिराज किशोर ने बिल्कुल अलग ढंग से चित्रित किया है।

'जुर्म आयद' नाटक में गिरिराज किशोर ने परिवार के कारण मानसिक पीड़ा से त्रस्त उम्मेदी को स्पष्ट किया है। उम्मेदी मुक्त तथा स्वच्छंदी विचार की नारी है। लेकिन शादी के बाद उसके मुक्त तथा स्वच्छंदी विचारों पर पाबंदी लगाई जाती है तथा उस पर अत्याचार किया जाता है। उसे बेटी हो जाने के बाद उसे लगता है कि अब अत्याचार कम हो जाएँगे। लेकिन उसको पति उसकी बेटी का बाप होने से ही मुखर जाता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है - "जब तक गलाजत अपने तक महदूद थी, उम्मेदी

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो पृष्ठ- 55
2. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो पृष्ठ-253

देवी चुपचाप सह रही थी। मासूम बेटी तक पहूँची तो वह अपना संतुलन खो बैठी।"[1] इस आरोप को उम्मेदी सह नहीं पाती। उसकी मानसिक स्थिति बिगड़ जाती है। इसीलिए वह अपनी बेटी के साथ खुदखुशी करती है जिसमें वह बच जाती है लेकिन दुर्भाग्य से उसकी बेटी तो मर जाती है। परिणामत: उम्मेदी को खुदखुशी करने तथा बेटी के कत्ल के जुर्म में दफा 302 तथा 307 की तहत जेल में बंद कर दिया जाता है। जेल की भ्रष्ट पुलिस के कारण उम्मेदी की मानसिक स्थिति और भी बिगड जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि पारिवारिक इल्जाम तथा पुलिस के गंदे बर्ताव के कारण उम्मेदी मानसिक पीड़ा से त्रस्त होती है।

4.16 अस्तित्वहीन नारी की समस्या :

कानून ने मनुष्य को विचार करने का स्वातंत्र्य दिया है। रीतिकाल तथा प्राचीन काल में नारी को निर्णय लेने का भी अधिकार नहीं था। उसे पुरुष ने एक मरीज जैसा बना दिया था। समाज में नारी का स्थान किसी वस्तु की तरह था। मनुष्य ने उसे भोग की वस्तु माना और इसी कारण उसका अस्तित्व खत्म हो गया।

'प्रजा ही रहने दो' में अस्तित्वहीन द्रौपदी की समस्या को स्पष्ट किया गया है। एक नारी होकर भी उसे पति चुनने का अधिकार नहीं था। द्रौपदी को पांच पांडवों के साथ शादी करनी पड़ती है। पांच पांडव द्रौपदी को अपनी राजनीति के लिए जुए में दांव पे लगाते हैं। जुए में कौरव विजयी होने के कारण द्रौपदी को अस्तित्वहीन नारी मानते हैं। शकुनि सारी प्रजा के सामने द्रौपदी को अस्तित्वहीन कर देता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है, "आओ राजमहिषी, तुम्हारे पति ने तुम्हें ही दांव के लिए चुना है। प्रश्न मत करो।प्रश्न के बाद प्रश्न और फिर प्रश्न। प्रश्नों का क्या कभी कोई निश्चित उत्तर होता है। तुम्हारें ऊपर तो आंखे ही नहीं टिकती।कहां तुम और तुम्हारा ये वरिष्ठ पति युधिष्ठर। कहो तो वस्त्र और आभुषण उतारता हूँ। इनसे एक और दांव खेल लेना

---

1. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद पृष्ठ - 22

उतारो, दु:शासन उतारो।"[1] अत: स्पष्ट होता है कि नारी का आधार उसका परिवार होता है। वही परिवार अगर उसे किसी मूल्यहीन वस्तु की तरह दांव पर लगाता है तो नारी खुद को अस्तित्वहीन समझ मजबूर हो जाती है।

4.17 अपमानित नारी की समस्या :

मनुष्य खुद को बड़ा दिखाने के लिए किसी को नीचा दिखाता है। मनुष्य अपने स्वार्थ हेतु किसी को श्रेष्ठ तथा किसी को कनिष्ठ मानकर उसे अपमानित करता है। पुरुषप्रधान सत्ता नारी को सदियों से अपमानित करती आयी हैं।

'नरमेध' नाटक में गिरिराज किशोर ने अपमानित नारी वंती को स्पष्ट किया है। वंती स्पष्ट विचार की नारी है। तारा के बेटे वन्दु और रंजन दोनों भी वंती से प्यार करते हैं। लेकिन वंती वंन्दु के भाई रंजन को सिर्फ अपना दोस्त मानती है लेकिन तारा बिना सोचे समझे वंती को ही भला-बुरा तथा बदचलन मानती है इसीलिए वह वंन्दु और वंती की शादी का विरोध करती है। इन्द्रराव वंती को मिलने के लिए उसके घर जाता है तो वंती तारा के बर्ताव को स्पष्ट करती है। प्रस्तुत कथन देखिए – "जब चाची ने कहा था, मुझे बहू चाहिए, द्रौपदी नहीं। चाची की बात पर मुझे आश्चर्य हुआ था, मन से तो द्रौपदीयाँ सभी होती हैं। चाची तो यह जानती थी।"[2] अत: स्पष्ट होता है कि तारा वंती को बदचलन कहकर अपमानित करती है।

'प्रजा ही रहने दो' नाटक में अपमानित नारी द्रौपदी को स्पष्ट किया गया है। नाटककार गिरिराज किशोर ने इस नाटक के माध्यम से गंदी राजनीति तथा पुरुषप्रधान सत्ता पर तीखा व्यंग्य किया है। द्रौपदी को अपने पांच पतियों के कारण अपमानित होना पड़ता है। द्रौपदी एक नारी होकर भी कौरवों ने सारी प्रजा के सामने उसे निर्वस्त्र करके अपमानित किया था। इसी कारण द्रौपदी घर छोड़कर जाना चाहती

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो पृष्ठ- 40
2. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरेधम पृष्ठ- 40

है। वह अपने अपमान का प्रतिशोध लेना चाहती है। प्रस्तुत कथन देखिए 'मैं यदि कोई स्वप्न पालुंगी तो अपने अपमान के प्रतिशोध का। मेरे चीर हरण के समय कौरवों की स्त्रियां की ठ़ठा ठ़ठाकर हसं रही थी। अब मैं उनके रूदन की बानगी भी देखना चाहती हूँ। तब तक मेरा कोई पति होगा न भाई न ससूर और न संबंधो।"[1] अत: स्पष्ट होता है कि स्वाभिमानी व्यक्ति को अपना सम्मान जान से भी ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। अगर कोई उसे अपमानित करें तो वह पीड़ित होकर अपने अपमान का बदला लेना चाहता है।

4.18 लैंगिक समस्या से पीड़ित नारी की समस्या :

'केवल मेरा नाम लो' नाटक में गिरिराज किशोर जी ने लैंगिक समस्या से पीड़ित सुलभा की समस्या को स्पष्ट किया है। रजनीकान्त उसकी पत्नी रागिनी के मृत्यू के कारण मानसिक पीड़ा से त्रस्त हो जाता है। लेकिन उसकी बेटी सुलभा रागिणी की तरह दिखाई देती है। इसीलिए वह सुलभा पर रागिणी जैसा व्यवहार करने का बार-बार प्रयास करता है। सुलभा अपने पिता के इस गलत व्यवहार का विरोध करती है। तब रजनीकान्त उसे पकड़ने की कोशिश करता है। प्रस्तुत कथन दृष्टव्य है "ठहरो। ठहर जाओ। मैं तुम्हें न भागने दूँगा और न छिपने दूँगा...। मैं उन सब निषेधों को भूल चुका हूँ। तुम्हारें इस बकवास का मुझ पर कोई असर नहीं पड़ेगा। तुम नही जानती की तुम क्या हो। मरने के बाद रागिणी की तरह चलती हो... उठ़ती बैठ़ती हो... सोती हो... जागती हो... रोती हो... हँसती हो...। सुलभा रागिनी... रागिनी... सुलभा ... इस अंतर को मैंने पूरी तरह मिटा दिया है।"[2] अत: स्पष्ट है कि आज मनुष्य लैंगिक समस्या से इतना पीड़ित हो गया है कि वह अपनी बेटी को भी अपनी हवस का शिकार बनाना चाहता है। अत: यहाँ अपने पिता के कारण लैंगिक समस्या से पीड़ित नारी स्पष्ट होती है।

'जुर्म आयद' नाटक में नाटककार गिरिराज किशोर ने लैंगिक संबध से

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो पृष्ठ- 57
2. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो पृष्ठ-283

पीड़ित उम्मेदी का चित्रण किया है। उम्मेदी अपनी बेटी के साथ खुदखुशी करती है। जिसमें वह बच जाती है और उसके बेटी की मौत हो जाती है। इस कारण उम्मेदी को दफा 302 और 307 की तहत दोषी ठहराकर जेल में बंद कर दिया जाता है। वहाँ कानून का रक्षक दरोगा उम्मेदी पर लैंगिक अत्याचार करने का प्रयास करता है। जब दरोगा उसे अपनी हवस का शिकार बनाना चाहता है तब वह घबरा जाती है। प्रस्तुत कथन देखिए - "घबराती क्यों है बच गयी है तो मुल्क के काम जायेगी। मुल्क में तेरे जैसे जवान और चुस्त औरतों की कमी है। है ना? ...।"[1] यहाँ स्पष्ट होता है कि अपने कानूनी अधिकारों के फायदा उठाकर मजबूर नारी को अपनी हवस का शिकार बनाने की कोशिश करनेवाला दरोगा यहाँ स्पष्ट होता है। साथ ही रक्षक के ही हाथों लैंगिक भक्ष्य बनती हुई उम्मेदी स्पष्ट होती है।

4.19 मर्यादाओं में दबी नारी की समस्या :

वर्तमान भारतीय नारी के विचारों में परिवर्तन हो रहा है। प्राचीन काल की नारी मर्यादाओं के अंदर अट्क गयी थी। उसे स्वयं का निर्णय स्वयं लेने का अधिकार नहीं था। उसे पुरुषप्रधान सत्ता ने सीमित मर्यादोओं में रखा था।

'प्रजा ही रहने दो' नाटक में गिरिराज किशोर ने मर्यादाओं में दबी द्रौपदी का चित्रण किया है। द्रौपदी की शादी पाँच पांडवो के साथ हो जाती है। द्रौपदी कुंती का विरोध भी नहीं कर सकी। द्रौपदी को कुंती रोटी के टुकड़ों की तरह पाँच पांडवो में बाँट देती है और पांडव अपने राजनीति के लिए किसी वस्तु की तरह उसे दाँव पर लगा देते हैं। फिर भी द्रौपदी किसी का भी विरोध मर्यादाओं के कारण नहीं करती। इसीलिए वह कुंती से मर्यादाओं के उल्लंघन की आज्ञा मांगती है। देखिए - "मेरी वही सीमा आ गयी। जहां शील, संकोच, भय, सब समाप्त हो जाता है। मुझे आज्ञा दें, मैं आपके पुत्रों की सोयी हुई आत्मा को पुन: जागृत करूंगी। राजा बनने के बाद जिन शास्त्रो की

---

1. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद पृष्ठ – 13

पहचान समाप्त हो गयी थी उसे फिर से कराऊंगी।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि पुरुषप्रधान सत्ता ने नारी पर इतना अत्याचार किया है कि उसे स्वयं का निर्णय स्वयं लेने का भी अधिकार नहीं दिया है।

4.20 पुत्र शोक से पीड़ित नारी की समस्या :

मनुष्य का जन्म एक नारी से ही हो जाता है। उसे माता कहा जाता है। बच्चें को सही दिशा देने का काम नारी ही करती है। वह अपनी संतान की चिंता करती है। डॉ.रामेश्वर नारायण रमेश के अनुसार "हिंदू समाज में नारी का मातृत्व रूप पूज्य है। पुरुष के लिए पत्नी का जितना भी अधिक महत्त्व हो पर मातृत्व रूप की पहचान उसकी उपयोगिता के समस्त नारी के सभी रूप है। नारी के इस रूप के प्रति एक-एक व्यक्ति श्रदधावान है। माँ के अंचल की छाया में जो शितलता विद्यमान है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। मां का स्नेह व्यक्ती को विशेष रूप में शक्ति प्रदान करता है। उसकी स्नेह छाया में पलकर व्यक्ति विनम्र, शालीन होता है।"[2] अगर उसी माँ के संतान की उसके ही सामने मौत हो जाती है तो उसका जीवन उजड़ जाता है। उसका मन दु:ख तथा निराशा से भर जाता है।

'प्रजा ही रहने दो में' नाटक गिरिराज किशोर ने पुत्र शोक से पीड़ित द्रौपदी को स्पष्ट किया है। महाभारत के कौरव-पांडव युद्ध में पांडवो की जीत हो जाती है। उसमें आधे से ज्यादा सेना मारी जाती है। द्रौपदी का पुत्र भी युदध में मारा जाता है। युधिष्ठर जब युद्ध में विजय पाकर आता है तो द्रौपदी टोकती है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "मेरे पुत्र कहाँ गएँ? भाई-भतीजे कहाँ है। सब कुछ खो देनेवाली स्त्री को कही महाराणी कहते है मेरा उपहास मत कराओ। रोको। इनसे कहो, मुझे नाम ही देना है तो पांचाली कहो, न द्रौपदी... न कृष्ण न बहू... न बेटी।"[3] इससे स्पष्ट होता है

---

1. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो पृष्ठ- 56
2. डॉ.रामेश्वर नारायण 'रमेश' - साहित्य में नारी विविध संदर्भ पृष्ठ- 15
3. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो पृष्ठ- 108

कि माता को सबसे प्रिय अपनी औलाद होती है अगर वह नहीं है तो उसका जीवन उसके लिए व्यर्थ हो जाता है।

4.21 पश्चाताप से पीड़ित नारी की समस्या :

पश्चाताप ही मनुष्य को अपनी गलतीयों को सुधारने का मौका प्रदान करता है। मनुष्य में सुधार लाने के लिए पश्चाताप होना आवश्यक होता है।

'नरमेध' नाट्क में पश्चाताप से पीड़ित तारा को गिरिराज किशोर ने चित्रित किया है। तारा जब वन्दु और वंती की शादी का विरोध करती है तब वंन्दु तारा के व्यवहार से दुखी होकर अमरिका चला जाता है। वह सोचता है कि अमरिका जाने से माँ के विचार बदल जाएंगे। लेकिन तारा के विचार वही रहते हैं। वंती की शादी दूसरे लड़के के साथ तय हो जाती है तो वंती शादी का कार्ड वंन्दु को अमरिका भेज देती है। वंन्दु वंती की शादी का कार्ड देखकर तारा के प्रति नाराजगी व्यक्त करते हुए पिताजी को चिठ्ठी लिखता है। लेकिन वह चिठ्ठी तारा के हाथ लग जाती है। इसीलिए वह खुद को दोषी ठहराते हुए कहती है - " हाँ शायद वे कह रही थी मैंने अपने बच्चों की खुशी अपने हाथों दफना दी।"[1] उसे लगता है कि वह बच्चों के सुख में बाधा बन गई है। इसीलिए उसे पश्चाताप हो जाता है। परिणामत: खुदखुशी करने पर विवश हो जाती है।

निष्कर्ष :

प्राचिन काल से लेकर आज तक नारी को हर समस्या का सामना करना पड़ा है। कानून ने स्त्री-पुरुष को समान अधिकार दिएँ हैं फिर भी नारी पर अत्याचार हो रहे हैं। उन समस्याओं को नाटककार गिरिराज किशोर ने अपने नाटकों में बड़ी गहराई के साथ चित्रित किया है।

'परिवार से पीड़ित नारी की समस्या' में स्पष्ट होता है कि नारी का आधार उसका परिवार होता है। नारी उस परिवार का सदस्य होती है। लेकिन वही परिवार जब

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरेधम पृष्ठ- 36

उसे मूल्यहीन तथा महत्त्वहीन समझता है तब वह नारी उस परिवार से पीड़ित हो जाती है। गिरिराज किशोर के नाटकों में माता, बहू, बेटी और पत्नी जैसे परिवार के केंद्रीय घटक नारी होकर भी अपने ही परिवार के पति, बेटे, ससुर और पिता से पीड़ित है।

'चंचल वृत्ति के नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि कुछ नारीयाँ अपने विचारों पर सही तरह कब्जा नहीं रख पाती है। परिणामत: उनके विचारों में चंचलता दिखाई देती हैं। 'असाहय नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि नारी को प्राचीन काल में केवल एक भोग्या तथा उपभोग की वस्तु माना गया था। उसे किसी मूल्यहीन वस्तु का स्थान दिया गया था। आज के वर्तमान परिवेश में भी उस पर अत्याचार हो रहें है और आज भी वह असाहय है।'स्वाभिमानी नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य सबसे ज्यादा महत्त्व अपने स्वाभिमान को देता है। कई बार उसे स्वाभिमान के कारण कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।नारी स्वाभिमान के लिए जान भी दे सकती है।

'अभावग्रस्त नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि गरीबी के कारण नारी को कई समस्या ओं का सामना करना पड़ता है। गरीबी के कारण नारी को घर संभालना मुश्किल हो जाता है। परिणामत: उसके घर में अभावग्रस्तता दिखाई देती है।

'पुलिस से पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि समाज की रक्षा पुलिस करती है। लेकिन वही पुलिस अपने अधिकारों का गलत इस्तेमाल जब नारी पर करती है तब नारी पीड़ित हो जाती है। 'आश्रीत नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि प्रार्चीन काल से लेकर आज तक नारी पुरुष सत्ता के अधिन तथा आश्रीत रही है। इसी कारण वह चुपचाप अत्याचार सहती जा रही है। 'बदनामी से पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य को समाज में प्रतिष्ठित दिखाने का काम उसकी इज्जत करती है। नारी जब समाज से बदनाम हो जाती है तो उसका जीना मुश्किल हो जाता है।

'पिता से पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि पिता ही जब अपनी बेटी को अपनी वासना का शिकार बनाने कोशिश करता है। तब उस बेटी की जीने की चाह तथा उम्मीद ही खत्म होती है। 'पति से पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट

होता है कि प्राचिन काल से लेकर आज तक नारी पति परायण होने के कारण पति के अत्याचार चुपचाप सहती आ रही है। 'राजनीति से पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में नारी को उपभोग की वस्तु माना गया था। इसलिए उसे राजनीति में किसी वस्तु की तरह गया किया गया था। 'वृद्ध नारी की समस्या' में स्पष्ट होता है कि वृद्ध नारी का आधार उसकी संतान होती है। लेकिन उसी संतान की मौत उसके सामने जब हो जाती है तो उस वृद्ध नारी का जीवन आधारहीन बन जाता है। 'नारी शिक्षा की समस्या' से स्पष्ट होता है कि आज भी शिक्षित नारी की मात्रा कम है और शिक्षा न लेने के कारण उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। 'भयभीत नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि उस पर निरंतर किए गए अत्याचार के कारण वह डर को मन में लेकर जीती रहती है।'मानसिक पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि नारी स्वंय को अपने परिवार का मुख्य सदस्य मानकर परिवार की देखभाल करने में व्यस्त रहती है। लेकिन परिवार के सदस्य अगर उसे बदनाम तथा उसपर अत्याचार करें तो उस नारी की मानसिक स्थिति से बिगड़ जाती है।

'अस्तित्वहीन नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में नारी को खुद का निर्णय स्वयं लेने का अधिकार नहीं था। उसे मूल्यहीन वस्तु की तरह माना गया था इसलिए उसका अपना अलग अस्तित्व नहीं था। 'अपमानित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि नारी को अपने जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक पुरूष की तुलना में अनेक बार अपमानित जीवन जीना पड़ता है। 'लैंगिक समस्या से पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि आज के वर्तमान युग में लैंगिक समस्या प्रमुख बन गई है और वह इसका शिकार बन रही है। 'मर्यादाओं में दबी नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि नारी आज भी अपनी मर्यादाओं में रह रही है। वह उस पर होनेवाले अत्याचारों को सहती रहती है। मर्यादाओं की समस्या के कारण वह अपनी पहचान नहीं बना पाई है। 'पुत्रशोक से पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि नारी को अपनी औलाद प्यारी होती है। उसके लिए वह किसी भी समस्या का सामना करने के लिए तैयार हो

जाती है। लेकिन उसी औलाद की जब उसके सामने ही मौत हो जाती है तो उसका जीवन दुखमय बन जाता है।

'पश्चाताप से पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि नारी जाने-अनजाने में गलत कार्य कर बैठती है। लेकिन अंत में वह पश्चाताप करने लगती है।नारी अपनी मजबूरी के कारण कुछ ऐसे काम करती है जिस कारण वह पश्चाताप से पीड़ित हो जाती है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि नाटककार गिरिराज किशोर ने अपने नाटकों के माध्यम से नारी की अनेक समस्या ओं उद्घाटन किया है। नारी के आंतरिक और बाहय दोनों प्रकार के समस्या ओं का चित्रण करने में किशोर हुए हैं।